K. Nand M.A I Sem

Q:— Explain disadvantage and limitation of Experimental design or quasi experimental design.

Ans:—

आधुनिक मनोविज्ञान में नित नये शोध हो रहे हैं। शोध में अभिकल्प (Design) का स्थान महत्वपूर्ण माना गया है। परिकल्पना की सत्यता की जाँच हेतु उचित अभिकल्प का चयन किया जाता है। प्रयोगात्मक अभिकल्प एक महत्वपूर्ण शोध अभिकल्प (Research design) है। प्रयोगात्मक शोध अभिकल्प शोधकर्ताओं के बीच अपनी विशेषताओं के लिए आजकल काफी प्रचलित है। परन्तु इस अभिकल्प की सीमाएं निश्चित है। ढेर सारी विशेषताओं के बावजूद भी इसमें कुछ दोष भी हैं। प्रयोगात्मक अभिकल्प Experimental Design) के कुछ प्रमुख दोष एवं परिसीमाएं निम्नवत् है—

(1) प्रयोगात्मक अभिकल्प का एक सबसे बड़ा दोष यह है कि यह काफी जटिल होता है। कारक गुणित अभिकल्प Factorial Design) में इस अभिकल्प की जटिलता काफी बढ़ जाती है जिसके फलस्वरूप सांख्यिकीय परिगणना (Statistical calculation) बहुत जटिल हो जाता है।

K. Nand M.A I Sem's

(ii) प्रयोगात्मक डिजाईन या अभिकल्प का एक बड़ा दोष यह भी है कि शोध के दौरान अर्थात शोध अनुमान व संबंधित वैसे परिवर्त्यों या चरों ~~के~~ प्रभाव का अध्ययन ~~अध्ययन~~ नहीं किया जा सकता है जिनमें जोड़-तोड़ (manipulation) संभव नहीं है। यानि यह कहा जा सकता है कि प्रयोगात्मक अभिकल्प से सभी प्रकार के चरों का अध्ययन संभव नहीं है।

(iii) प्रयोगात्मक शोध अभिकल्प (Design) तैयार करने के लिए शोधार्थी को पूर्णरूप से कुशल होना आवश्यक होता है। अन्यथा प्रयोगात्मक अभिकल्प से वांछित परिणाम प्राप्त करना अत्यन्त कठिन हो जाता है।

प्रयोगात्मक अभिकल्प तैयार करने के लिए शोधार्थी को अन्य सभी ~~एक~~ अभिकल्प (Design) तैयार करने की अपेक्षा अधिक कौशल की आवश्यकता रहती है। अर्थात ~~एक~~ प्रयोगात्मक अभिकल्प (Design) वैसे शोधकर्त्ता ही तैयार कर सकते हैं जो इसमें पूर्ण निपुणता प्राप्त कर चुके हैं। अभिकल्प निर्माण में थोड़ी सी ~~चूक~~ कमी भी पूरे अध्ययन को प्रभावित करेगा और फलतः परिणाम सही नहीं प्राप्त होने से पूरा अध्ययन बे परिणाम साबित होगा।

K. Nawal M.A I Sem

(IV)

प्रयोगात्मक अभिकल्प का एक ~~सबसे~~ बड़ा दोष यह है कि इसमें समय, श्रम तथा धन का व्यय अन्य अभिकल्पों की अपेक्षा ~~अ~~ अधिक होती है।

Quasi experimental design

प्रायोगिक-कल्प अभिकल्प (Quasi experimental design) अप्रायोगिक शोध अभिकल्प (Non-experimental research) का एक प्रमुख प्रकार है। अन्य प्रायोगिक अभिकल्पों की तरह इस अभिकल्प के कुछ प्रमुख दोष मनोविज्ञानियों द्वारा निर्धारित किए गए हैं, जो दोष या परिसीमाएँ निम्न लिखित हैं-

(1) प्रयोगात्मक-कल्प अभिकल्प (Quasi experimental design) का एक सबसे बड़ा दोष यह है कि स्वतंत्र-चरों या परिवर्त्यों (variables) में जोड़-तोड़ संभव नहीं है। फलत: सभी प्रकार के अध्ययनों के लिए यह अभिकल्प (design) उपयोगी नहीं है।

(11) प्रयोगात्मक अभिकल्प (experimental design) की तरह Quasi experimental design में भी यादृच्छिक (randomly) प्रयोगात्मक

D. Nand M.A.I Sem

समूह और नियंत्रित समूह को बराबर करना संभव नहीं है। फलतः इस अभिकल्प की सीमाएं काफी कम हो जाती है। मानो दूसरी शोध अध्ययनों के लिए यह उपयोगी नहीं है।

(III) प्रयोगात्मक-कल्प अभिकल्प (Quasi experimental design) में बाह्य चरों (extraneous variables) पर को शोधार्थी नियंत्रण नहीं रख पाते है। फलतः आश्रित-चरों या अध्ययन किये जाने वाले चरों से प्राप्त परिणाम की शुद्धता प्रभावित होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। इसी कारण इस अभिकल्प की विश्वसनीयता कम होती है।

(IV) Quasi-experimental design की सीमाएँ अत्यन्त सीमित होती है। आश्रित चर अर्थात जिसका अध्ययन अभिप्रेत होता है पर व्यवहारों का रिकार्ड करना संभव नहीं हो पाता है।

ऊपर वर्णित दोषों एवं परिसीमाओं के कारण Quasi experimental design का उपयोग शोधकर्ताओं द्वारा काफी कम किया जाता है।

The End